International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

स्ववित्त–पोषित एवं अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक

डॉ0 ए0बी0 भटनागर

शोधकर्ता

नीरेश बाबू

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

गजरौला, उत्तर प्रदेश

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक, धर्म निरपेक्ष, समाजवादी गणराज्य बनाने के लिए उसके समस्त नागरिकों को न्याय, स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व प्रदान किये जाने का उल्लेख है। यही हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है, यही हमारे राष्ट्र के मूल्य व उद्देश्य हैं।

इन राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा को एक सशक्त माध्यम माना गया है और यह सही भी है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र ने अपनी अद्वितीय सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृकितक अभिव्यक्ति के लिये अपनी अलग राष्ट्रीय प्रणाली का विकास किया है। भारत में इस दिशा में प्रयास 1948 से प्रारम्भ हुए थे जबकि डॉ0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया और सन् 1952 में श्री मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग गठित हुआ, इन आयोगों की रिपोर्ट आयी, क्रियान्वित भी हुई किन्तु शिक्षा के समग्र रूप पर विचार डॉ0 कोठारी की अध्यक्षता वाले शिक्षा आयोग (1964–66) ने किया, जिसके आधार पर जुलाई 1968 में सर्वप्रथम स्वतन्त्र भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिखा नीति की घोषणा की गई।

इस शोध के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है, कि वह कैसा वातावरण है, जिसमें रहकर बालक का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। इसके द्वारा यह ज्ञान भी प्राप्त हो सकता है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों वातावरण में कौन–कौन से पक्ष है, जो इन दोनों में अन्तर पैदा करते हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत विक्षकों के लिए भी यह अध्ययन अति उपादेय सिद्ध होगा क्योंकि सभी वर्तमान विद्यालय, उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं समाज, अध्यापक से केवल यह आशा करते हैं कि बालक को न केवल सूचनात्मक ज्ञान दें, बल्कि उसका यह भी दाययित्व होता है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–

हसीन (1998) ने सामाजिक वर्ग तथा आधुनिकता के सन्दर्भ में हिन्दू तथा अहिन्दू छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में सभी तीन प्रकार–राजकीय वित पोषित मान्यतायें प्राप्त व वित विहीन मान्यता प्राप्त विद्यालयों के 400 छात्रों का सामान्य स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। उपकरण के रूप में राघवेन्द्र, एस0 सिंह, अमरनाथ एवं त्रिपाठी, राजीबाद का आधुनिकीकरण मापनी, गिलानी का मूल्य परीक्षण एवं कुप्पूस्वामी का सामाजिक–आर्थिक स्तर मानी प्रयोग किये गये। शोध के प्रमुख निष्कर्ष थे –

1. व्यक्तिगत मूल्यों के सम्बन्ध में हिन्दू तथा मुसलमान बालकों में मतभेद थे किन्तु हिन्दू व मुसलमान बालिकाओं या मुसलमान बालकों, बालिकाओं से किसी प्रकार मतभेद नहीं था।
2. जब उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों की तथा छोटे व बड़े परिवारों वाले छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना की गयी तो यह पाया गया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा बड़े परिवारों के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य अन्य तुलना में उच्च थे।
3. निम्न आधुनिक छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य अन्य की तुलना में उच्च पाये गये।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

4. सामाजिक वर्ग व आधुनिकीकरण के मध्य सार्थक ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया।
5. ईसाई तथा मुसलमान छात्रों के व्यग्ति मूल्य आधुनिकता से प्रभावित थे किन्तु छात्रों में ऐसा नहीं था।
6. विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य भिन्न थे।

मार्गन, डब्लू एवं स्टैन (2001) ने अपने अध्ययन में पाया कि समाज में सेवा के द्वारा छात्रों में नैतिक मूल्य का निर्माण किया जा सकता है।

अस्थाना एवं श्रीवास्तव (2002) में हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के मध्य मूल्य एवं आत्मप्रत्यय पर सार्थक अन्तर पाया।

श्रीवास्तव (2002) ने एक समान सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के हिन्दी एवं अंगेजी माध्यम में पढ़ने वाले छात्रों के के मध्यम विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है :–

1. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्र/छात्रा अध्यापकों के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये अनुसन्धान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉमेर्टिव सर्वे मैथड ऑफ रिसर्च) का प्रयोग किया है।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी0एड0 कक्षा के सी0एस0 जे0 एम0 विश्वविद्यालय कानपुर प्रक्षेत्रा प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र/छात्रा अध्यापकों के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श की चयन की इकाई प्रशिक्षण महाविद्यालय है। शोधकर्त्री ने न्यादर्श की इकाईयों का चयन करने के लिये सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश के सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय कानपुर प्रक्षेत्र के प्रशिक्षण महाविद्यालयों (स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित महाविद्यालय) में से अपने शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन किया है। न्यादर्श चयन सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय कानपुर प्रक्षेत्र के केवल दो जिला (फर्रूखाबादख कानपुर नगर) के प्रशिक्षण महाविद्यालयों की सूची बनाकर उसमें से लाटरी विधि द्वारा छः स्ववित्तपोषित के एवं चार अनुदानित प्रशिक्ष्ण महाविालय को चुना गया है। तदोपरान्त इन महाविद्यालयों में से एक निश्चित अनुपात में बी0एड0 के छात्र एवं छात्रा अध्यापकों को यादृच्छिकी प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु यादृच्छिकी न्यादर्श की लाटरी विधि का चयन न्यादर्श चयन हेतु किया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर :–

स्वतन्त्र चरः स्ववित्तपोषित एवुं अनुदानित आश्रित चरः मूल्य,

व्यक्तित्व मूल्य प्रश्नावली – प्रयुक्त अध्ययन में शैरी एवं वर्मा द्वारा निर्मित भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल व्यक्तिगत प्रश्नावली का परीक्षण प्रयोग किया गया। इस परीक्षण के द्वारा निम्नलिखित दस मूल्यों का मापन किया जाता है।

1. धार्मिक मूल्य
2. समाजिक मूल्य
3. प्रजातांत्रिक मूल्य
4. सौन्दर्यात्मक मूल्य
5. अर्थमूल्य

6. ज्ञान मूल्य
7. सुख मूल्य
8. पावर मूल्य
9. पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य
10. स्वास्थ्य मूल्य

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ : प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

1— मध्यमान

2— मानक विचलन एवं

3— टी—परीक्षण

शोध—परिणाम एवं निष्कर्ष :—

*.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है: **.05 पर सार्थक अन्तर है:

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य धार्मिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों ही स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। इसका अर्थ यह है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छठात्रा अध्यापकों) के मध्य सामाजिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। सामाजिक मूल्य एक समान रूप से विकसित नहीं है।

अनुदानित विद्यार्थियों की अपेक्षा स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य प्रजातांत्रिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। प्रजातांत्रिक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं।

स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) की अपेक्षा अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक विकसित हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य सौन्दर्यात्मक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) की अपेक्षा अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य अर्थ मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। अर्थ मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) की अपेक्षा अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में अर्थ मूल्य अधिक विकसित हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य ज्ञान मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। ज्ञान मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) की अपेक्षा अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में ज्ञान मूल्य अधिक विकसित हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य सुख मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। सुख मूल्य समान रूप से विकसित हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य पावर मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। पावर मूल्य समान रूप से

विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) की अपेक्षा अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में पावर मूल्य अधिक विकसित हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य सुख मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। सुख मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) की अपेक्षा अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) में सुख मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा अध्यापकों) के मध्य पावर मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। पावर मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्र अध्यापका की तुलना में पावर मूल्य अधिक विकसित हुए हैं। स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापको के मध्य पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित छात्र अध्यापकों की तुलना में अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापकों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापको के मध्य स्वास्थ्य मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। स्वास्थ्य मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्र अध्यापका की तुलना में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

*.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है: **.05 पर सार्थक अन्तर है:

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापको के मध्य धार्मिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। धार्मिक मूल्यों का विकास एक समान रूप से हुआ है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापको के मध्य सामाजिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। सामाजिक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। अनुदानित छात्र अध्यापका की अपेक्षा स्ववित्तपोषित छात्र अध्यापकों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापको के मध्य प्रजातान्त्रिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। प्रजातान्त्रिक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित छात्र अध्यापका की अपेक्षा अनुदानित छात्र अध्यापकों में प्रजातान्त्रिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित विद्यार्थियों छात्र अध्यापको के मध्य स्वास्थ्य मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। स्वास्थ्य मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। स्ववित्तपोषित छात्र अध्यापका की अपेक्षा अनुदानित छात्र अध्यापकों में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

शैक्षिक अनुप्रयोग :

असमानता इस संसार का सत्य है, वर्तमान में भारत ही क्या समस्त विश्व के शिक्षाविद, समाज सुधारक जोर–जोर से आवाज उठाकर असमानता का विरोध और समानता की बात कर रहे हैं, क्योंकि सबको समान सुविधायें उपलब्ध न होने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता तथा बालकों का व्यक्तित्व प्रभावित हो रहा है।

अतः प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत करने से शोधार्थी का तात्पर्य यह है कि यदि हमें ''सबके लिए शिक्षा व ऊँच–नीच'' के भेदभाव को मिटाने का संकल्प पूर्ण करना चाहते हैं तो सरकार को सभी क्षेत्रों में समान सुविधायें उपलब्ध करानी होगी जिससे कि इन सुविधाओं का लाभ उठाकर प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित विद्यार्थी अपने प्रतिभा को प्रदर्शित

कर सके एवं समान रूप से उन्नत कर अपने परिवार, समाज व राष्ट्र को गौरवान्वित कर सके।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, वी वैल्यू सिस्टम एण्ड डायमेन्शन्स ऑफ यूनिवर्सिटभ् स्टूडेन्ट्स ऑफ यू0पी। डाक्टोरल थीसिस, लखनऊ यूनिवर्सिटी, 1959 उद्धृत, एम0बी0 बुच द्वारा संपादित ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सेन्टर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन एजुकेशन बड़ोदा, 1974, 991
2. कपिल, एच0के0: ''अनुसन्धान विधियाँ'' हर प्रसाद भार्गव, 41230 कचहरी घाट आगरा–4, पेज 1941
3. गिलोर्ड, जे0पी0: फण्डामेन्टल स्टेटिटिक इन साइक्लोजी एण्ड एजूकेशन, मेग्राहिल, 1950।
4. गैरिट, एच0ई0: स्टेटिटिक इन साइक्लोजी एण्ड एजूकेशन, बम्बई, बेफक्सि फेयर्स एण्ड सोमेन्स प्राईवेट लिमिटेड, पेज 363।
5. गल्टन हेरीडिटी जर्म्स, मैकमिनल एण्ड कम्पनी, 1969।
6. डोरथी, टी0एस0 : द वैल्यूज द पोस्ट वार कालेज स्टूडेन्ट्स द जर्नल आफ सोशनल साइकोलाजी 1952, 35, 217–251
7. दिवाकर, टी0एम 1996 : एक कम्पेरेटिव स्टडी आफ सम डिफरेन्शिएटिंग पर्सनालिटी वैरिएबल्स एण्ड वैल्यूज ऑफ हायर सेकेण्ड्री स्टूडेन्ट्स ऑफ वाकेशनरल टेक्निकल कोर्स एण्ड नान टेक्निकल कोर्स इन विदर्भ। पी0एच0डी0 एजूकेशन, नागपुर यूनिवर्सिटी, गाइड, गाइड : डॉ0 सी0के0 नागोस, इण्डियन एजूकेशनल एब्स्ट्रैक्ट, जनवरी 2001, पृ0 40–41।
8. बेस्ट, जे0 डब्ल्यू0 : ''रिसर्च एन ऐजुकेशन'' न्यू दिल्ली, प्रेन्टसी हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, 1981।

9. बुच, एम0बी0 : थर्ड सर्वे ऑफ भटनागर, आर0पी0 : ए डिफिरेन्षियल स्टडी ऑफ वैल्यूज ऑफ मेल ग्रेजुएट्स। जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलोजी, जुलाई, 1963, 21, (2), पृष्ठ 66–73।

10- रिसर्च इन एजुकेशन, (1978–83)